शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 2; जनवरी-जून, 2021; पृष्ठ संख्या : 54-69

भारतीय जन-आंदोलन और समकालीन हिंदी और मणिपुरी कविताओं में इसका प्रभाव

✍ डॉ. एन. प्रियोबती देवी

शोध-सार :

भारतीय साहित्य का भंडार समृद्ध है और इस समृद्धि का कारण भारत की विविध भाषाओं का साहित्य है। संस्कृत साहित्य की नींव पर भारत की अनेक भाषाओं के साहित्य का विकास हुआ है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक इन भारतीय भाषाओं में निरंतर साहित्य का निर्माण हो रहा है। हिंदी और मणिपुरी भारतवर्ष की भाषाएँ हैं। जहाँ हिंदी भारत के अनेक प्रदेशों की भाषा है, वहीं मणिपुरी मणिपुर की भाषा है। हिंदी और मणिपुरी-इन दोनों भाषाओं में समकालीन उत्कृष्ट कोटि की कविताएँ मिलती हैं। समकालीन कवि युगीन यथार्थों के आधार पर अनेक कविताओं की रचना कर रहे हैं। इन कविताओं में जन-आंदोलनों का चित्रण मिलता है। भारत के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि विविध पहलुओं के केंद्र में जो जन-आंदोलन हुए, उन आंदोलनों ने इन कवियों को प्रभावित किया और यह प्रभाव उनकी कविताओं में अभिव्यक्त हुआ।

बीजशब्द: *समकालीन हिंदी कविता, समकालीन मणिपुरी कविता, जन-आंदोलन।*

1.प्रस्तावना :

भारतीय साहित्य का भंडार अतीव समृद्ध है और एक लंबी परंपरा का अतिक्रमण कर यह आज की स्थिति में पहुँचा है। भारतीय साहित्य को धरोहर के रूप में संस्कृत साहित्य की अक्षय निधि मिली है। इसी से पुष्पित एवं पल्लवित होकर भारतीय साहित्य का वटवृक्ष अनेक शाखाओं में विकसित हुआ है। भारतीय भाषाओं में काव्य-लेखन की परंपरा भी बहुत प्राचीन है। भारत की सर्वाधिक प्रचलित भाषा हिंदी का काव्य आदिकाल से ही गरिमामय रहा है। इसी तरह भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित मणिपुर की भाषा मणिपुरी में भी अनेक सुंदर-सुंदर काव्यों की रचना हुई है।समकालीन संदर्भ में भी हिंदी और मणिपुरी कविताओं का लेखन-कार्य सफलता से हो रहा है। इन दोनों भाषाओं की कविताओं में समकालीन जन-आंदोलनों की छवि का यथार्थ स्वरूप मिलता है।

2. विश्लेषण :

भारत में जब-जब अन्याय और अत्याचार चरमसीमा पर पहुँचा है, तब-तब जनता एकजुट हुई है। जब हम किसी खास मकसद के लिए एकजुट होते हैं और जन विरोधी तत्वों के खिलाफ आवाज उठाते हैं तो उसे जन-आंदोलन कहा जा सकता है। जन-आंदोलन में जनता की सहभागिदारी रहती है। कोई भी प्रतिरोध या विद्रोह जब तक जनता की भागीदारी नहीं होती और जनता के साथ सम्मिलित होकर उससे आगे नहीं बढ़ जाता, तब तक वह एक व्यक्ति का प्रतिरोध या वैयक्तिक विद्रोह बनकर रह जाता है। उसे जन-आंदोलन की स्वीकृति नहीं दी जाती। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय जनता ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। आजादी-प्राप्ति के उपरांत सन् 1970 तक देश में हुए जन-आंदोलनों ने गांधीजी की राह पर चलकर लोक हित के लिए काम किया। किंतु इसके बाद के भारतीय समाज में उभरे जन-आंदोलनों के रूप और लक्षण में काफी बदलाव दिखे।

2.1. भारत के प्रमुख जन-आंदोलन :

70 के दशक में भारतीय समाज में युवा शक्ति का जो उभार दिखा, वह बिहार आंदोलन से होकर पूरे देश में फैला और संपूर्ण क्रांति बनी। किंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि इस क्रांति ने सत्ता को बदल तो दिया साथ ही आंदोलन करने वाले भी सत्ता में आ गए, पर उन लोगों ने जनता के हित के लिए सोचने के बजाय अपने स्वार्थ के लिये काम करना शुरू किया। तब जाकर जनता को समझ में आया कि समाज का परिवर्तन सत्ता बदलने से नहीं होता है। इसके फलस्वरूप कुछ लोग देश के कोने-कोने में जाकर सामाजिक बदलाव के लिए काम

करने लगे तो कुछ नक्सल आंदोलन में शामिल हो गए।

80 के दशक में भी भारतीय समाज में जन-आंदोलनों का उभार हुआ था। किसानों, मजदूरों, मछुआरों और अन्य पिछड़े वर्गों की एकजुटता शुरू हुई। इन्होंने अपने अधिकार और सामाजिक बदलाव की बात की और जन-आंदोलन को नई परिभाषा देने का काम किया। इसी दौरान कुछ आंदोलनों ने राजनीति का हिस्सा बनने का प्रयास भी किया।

90 के दशक के दौरान भारत में भूमंडलीकरण, उदारीकरण, उपभोक्तावाद और बाजारीकरण का बोलबाला था। देश में विदेशी मुद्राएँ पहुँची थीं और एनजीओ संस्कृति का प्रसार तीव्र रूप से हो रहा था। भारत में स्थित एनजीओ सामाजिक बदलाव का काम कम और संस्था व प्रबंधन का काम ज्यादा कर रहे थे। इस कारण समाज में हो रहे जन-आंदोलनों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होने में समस्याएँ हो रही थीं। शुरुआत में ये एनजीओ जनता के प्रति जवाबदेह होते थे किंतु परवर्ती समय में ये अनुदान देने वालों के प्रति समर्पित हो गए। उनसे पश्चिमी तौर-तरीके अपनाए गए और सन् 2000 तक आते-आते शब्दावली पूरी तरह पश्चिमी हो गई। यहाँ तक कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सन् 2010 से एनजीओ के जरिए जन आंदोलन चलाने वालों का चरित्र अंतरराष्ट्रीय हो गया। वेबसाइट, मीडिया और रिपोर्ट में इनके काम ज्यादा दिखते हैं और वास्तविकता में कम। आज के दौर में एनजीओ के जन-आंदोलन और वास्तविक जन-आंदोलन में काफी फर्क आया है। इस समस्या का समाधान निकालकर एकजुट होने की आवश्यकता पड़ रही है।

आज देश के अलग-अलग हिस्सों में जन-आंदोलन चल रहे हैं। इनकी सामाजिक स्वीकार्यता भी है। किंतु बात यह है कि समय के बदलाव के साथ-साथ इनका स्वरूप बदला है। समस्याओं से लड़ने के तरीके भी बदले हैं। कई विरोधाभास की स्तिथियों के रहते हुए भी समाज पर भी इनका असर हो रहा है और व्यवस्था पर भी। उदाहरण के तौर पर कर्नाटक के गुलबर्गा में हुए भारत विकास संगम का आंदोलन और गंगा को लेकर चले आंदोलन को देखा जा सकता है। गंगा को लेकर चले आंदोलन में भारत के जाने-माने वैज्ञानिक गुरुदास अग्रवाल अनशन पर बैठे। अच्छे परिणाम न मिलने के बावजूद भी उन्होंने हार नहीं मानी। अंत में सरकार को दुबारा सोचना पड़ा। नतीजा यह रहा कि बाँध-निर्माण रद्द किया गया।

वर्तमान भारतीय समाज में भूमंडलीकरण और उदारीकरण के आने से उभरे दलित, स्त्री, पर्यावरण और सांप्रदायिकता के संकट को लेकर भारतीय जनगण सजग हो रहे हैं। साथ ही वर्तमान भ्रष्ट राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के खिलाफ़ अपना आक्रोश जाहिर करने के लिए देश के कोने-कोने में, समाज के सभी तबकों से हजारों लोग सड़कों पर उतर आये हैं। 24 जुलाई 1991 को मनमोहन सिंह ने बतौर वित्त मंत्री देश में नई आर्थिक नीतियों को लागू किया। उन नीतियों ने देश में कारोबार का मायाजाल बिछाया। इस विश्व बाजार में हर चीज उत्पाद बनती गई। प्रतिस्पर्धा का माहौल बनता गया। इस विश्व बाजार में जितना कमाने की क्षमता है उतना कमाया जा सकता है। समाज में अमीरों और गरीबों में फासला आने का कारण यही भी है। लोगों के अमीर बनने के इस ढोंग में जनता की एकता तोड़ने की साजिश स्थित है। अमीर होने के सपने दिखाकर जनता को रोजमर्रा के कामों में इतना उलझा दिया गया कि उसके पास देश और समाज के लिए सोचने और कुछ करने लिए समय ही नहीं बचा है। यह स्थिति जन-आंदोलन के लिए खतरा बनी हुई है।

आज देश के कोने-कोने में महंगाई विरोधी, भ्रष्टाचार विरोधी, सांप्रदायिकता विरोधी, प्रदूषण विरोधी, स्त्री-शोषण विरोधी आदि कई जन-आंदोलन जारी हैं। जब हम इन आंदोलनों पर सूक्ष्म रूप से विचार करते हैं, तो पाते हैं कि इन जन-आंदोलनों की जड़ भूमंडलीकरण की प्रक्रिया है और समस्त जन-आंदोलन इस प्रकिया के दुष्परिणाम हैं। यहाँ मेरे कहने का आशय यह नहीं है कि वर्तमान समय में जो भी जन-आंदोलन चल रहा है,इन मुद्दों पर, आज से पहले बात कभी नहीं हुई। भूमंडलीकरण के आने से पहले भी स्त्री मुद्दे, दलित मुद्दे, पर्यावरण को लेकर कई जन-आंदोलन होते आये हैं। किंतु भूमंडलीकरण के आने से उनका स्वरूप बदला है और प्रतिरोध का चरित्र तीव्र हुआ है। चाहे वह महंगाई, भ्रष्टाचार और घोटाले विरोधी जन-आंदोलन हो या आरक्षण संबंधी जैसे, 'जाट आंदोलन' आदि आंदोलन हो या पर्यावरण को लेकर जैसे 'नर्मदा बचाओ आंदोलन', 'गंगा बचाओ आन्दोलन' हो या आदिवासी मुक्ति आंदोलन हो या परमाणु विरोधी 'कुडनकुलम आंदोलन' समस्त जन-आंदोलनों की जड़ भूमंडलीकरण है। भूमंडलीकरण के खिलाफ विश्व के कोने-कोने में व्यापक रूप से कई जन-आंदोलन उभरे हैं उन देशों में भारत भी एक है।

भूमंडलीकरण के विरोध में मेहनतकशों के संगठन पिछले दो दशक से पूरी दुनिया में संघर्ष कर रहे हैं। इन दशकों में भूमंडलीकरण के विरोध में

भारत में 14 ऐतिहासिक औद्योगिक बंद आयोजित किए गए। बैंक, बीमा, कोयला, स्टील, पोस्टल, रेलवे जैसे क्षेत्रों में निजीकरण, छटनी, स्वैच्छिक और जबरिया सेवानिवृत्ति, कार्यों के संविदाकरण के विरोध जैसे विषयों को लेकर जबरदस्त लंबे संघर्ष भी हुए हैं। किंतु ये संघर्ष कभी प्रबल नहीं हो पाये, क्योंकि नवउदारवाद की नीति एक तरफ संगठित और असंगठित क्षेत्र के मेहनतकशों के अधिकारों और लाभों पर आक्रमण करती है, तो वहीं दूसरी तरफ रोजगार के नए और आधुनिक क्षेत्रों को खोलती है। नवउदारवाद औपचारिक क्षेत्र के कार्यों को अनौपचारिक क्षेत्र में स्थानांतरित करता है और वर्तमान कार्यों का विकेन्द्रीकरण करके ट्रेड यूनियनों की सदस्यता पर भारी चोट पहुँचाता है। इस तरह नवउदारवाद पहले से ही अनौपचारिक और असंगठित क्षेत्र में पैठ बनाने में कमजोर ट्रेड यूनियन आंदोलन को और कमजोर बनाता है। भूमंडलीकरण की प्रबल लहर का सामना करना मेहनतकशों के लिए असम्भव-सा है। फिर भी वे अपने आधिकारों के लिए जी जान लगाकर लड़ रहे हैं।

महँगाई को लेकर पूरे देश में जन-आंदोलन हो रहे हैं। इनमें भाजपाइयों का 'जेल भरो आंदोलन', महिलाओं का विरोध-प्रदर्शन, जगह-जगह पर गीतों, कविताओं, नुक्कड़ नाटकों द्वारा प्रदर्शन उल्लेखनीय हैं।

भारत में कृषक जन-आंदोलन की लंबी परंपरा रही है- तेलंगाना आंदोलन, तेभागा आंदोलन, भूमि हड़प आंदोलन, पारदी सत्याग्रह आंदोलन आदि। वर्तमान समय में, सन् 1990 के दशक में सरकार की कार्य-सूची में भूमि-सुधार का कार्य अब कहीं भी नहीं है, फिर भी राज्य सरकारों द्वारा सुधार संबंधी पास किये गये विभिन्न अधिनियमों को लागू करने हेतु कई जन-आंदोलन चलते रहे हैं। ये खेत जोतने, जोतने वालों को भूमि देने, भूमि सीमा कानून लागू करने और गरीब जोतदारों और भूमिहीन मजदूरों में भूमि-वितरण और अन्य बातों की माँग करते हैं।

हरित क्रांति के साथ पूंजीवादी खेती, बाजार अर्थ-व्यवस्था की घुसपैठ और वैश्वीकरण की शुरुआत से कृषक जन-आंदोलन के स्वरूप में परिवर्तन आ गया है। महाराष्ट्र में शेतकारी संगठन, उत्तर प्रदेश में भारतीय किसान संघ, गुजरात, तमिलनाडु और पंजाब में खेदूत समाज जैसे कृषक संगठनों की स्थापना राजनीतिक सांठगांठ के कारण हुई। इन संगठनों ने अपनी उपज की लाभकारी कीमत, बिजली और सिंचाई के शुल्क और बेहतरी हेतु उगाही आदि जैसे कृषिकर निवेशों में छूट और आर्थिक सहायता की माँग की। इन संगठनों ने 'इडिया के विरुद्ध भारत' का नारा दिया है। ये संगठन विकास के विचारांकन को औद्योगिक

विकास से कृषिकर विकास में परिवर्तन की माँग करते हैं।

आज आदिवासी मुक्ति जन-आंदोलन भी देश भर में चल रहा है। जन, जंगल, जमीन को लेकर चल रहे जन-आंदोलन दिन प्रतिदिन तीव्र होते रहे हैं।

समकालीन जन-आंदोलनों में नर्मदा बचाओ आंदोलन भी एक है। नर्मदा घाटी विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक रही है। आज भी नर्मदा घाटी अपनी समृद्ध प्रकृति के लिए मशहूर है। घाटी में नदी के किनारे पीढ़ियों से बसे हुए आदिवासी, किसान, मजदूर, मछुआरे, कुम्हार और कारीगर समाज प्राकृतिक संसाधनों के साथ अपनी मेहनत पर जीते आए हैं। यह घाटी यहाँ के निवासियों के लिये किसी न किसी रूप से उनकी जीविका का स्रोत भी रही है। किंतु सरकार ने नर्मदा नदी में सरदार सरोवर के साथ तीस बड़े बाँधों के निर्माण की योजना बनाई। इस योजना के विरोध में लगभग 27 वर्षों से 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' चल रहा है। इस आंदोलन ने विश्व बैंक को चुनौती देते हुए उसकी पोल खोली है। तीन राज्यों और केंद्र के साथ इसका संघर्ष आज भी जारी है। सरदार सरोवर के डूब क्षेत्र में दो लाख लोग बसे हैं। ये लोग सन् 1994 से डूबी जमीन के बदले जमीन के लिए लड़ रहे हैं। हजारों आदिवासी, बड़े-बड़े गांव और शहर, लाखों पेड़, मंदिर-मस्जिद, दुकान-बाजार पूरी तरह डूबे नहीं हैं, पर 122 मीटर की डूब में धकेले गए हैं। बड़े बांधों से समूचे घाटी के पर्यावरण को नुकसान के साथ लाखों लोगों का विस्थापन हुआ है, यह इस देश की धरोहर नर्मदा, वहाँ की उपजाऊ जमीन, जंगल और नदी के साथ भी खिलवाड़ है। सरदार सरोवर की लागत 4,200 करोड़ से बढ़कर 70,000 करोड़ रुपये हो गई है। इसके बावजूद सिंचाई के लिए पानी और बिजली की बहुत कम उपलब्धता है, कच्छ-सौराष्ट्र को पानी का अपेक्षित हिस्सा भी नहीं मिलता है। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनशक्ति के साथ हर मोर्चे पर खड़े इस आंदोलन ने सन् 1993 में पुनर्वास तथा पर्यावरण को होने वाले नुकसान को सही साबित किया। किंतु महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात की सरकारों, ठेकेदारों और नौकरशाहों ने बांध नहीं रोका। आखिर सर्वोच्च न्यायालय को उसे 1995 से 1999 तक रोकना पड़ा। फिर वर्ष 2000 से आगे बढ़ा महाकाय बांध आज भी रुका है। आज 40,000 से अधिक परिवार डूब क्षेत्र में रह रहे हैं। वर्ष 1993 से 1997 तक डूब चुकी आदिवासियों की जमीनें और गाँव सबूत हैं कि विनाश कितना भयावह होता

है। लड़ते-झगड़ते और लाठी-गोली खाते महाराष्ट्र और गुजरात में कुल 10,500 आदिवासी परिवारों को तो जमीनें मिल गईं, लेकिन तीन राज्यों में आज भी हजारों परिवारों के पास रहने के लिए जमीन नहीं है।

हाल ही में अन्ना हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार के खिलाफ जन-आंदोलन चला। इसे 'जन लोकपाल विधेयक आंदोलन 2011' के नाम से जाना जाने लगा है। इसमें भारत सरकार से एक मजबूत भ्रष्टाचार विरोधी लोकपाल विधेयक बनाने की माँग की गयी और अपनी माँग के अनुरूप सरकार को लोकपाल बिल का एक मसौदा भी दिया गया। इस आंदोलन में मजदूरों के यूनियन, किसान संगठन, महिला संगठन, नौजवान और छात्र संगठन, छोटे व्यापारियों के संगठन, ऑटो चालक, आदि तथा लोक राज जैसे संगठन व्यापक रूप से मोर्चे में शामिल थे। हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी ने अन्य जन संगठनों के साथ मिलकर, लोगों को सत्ता में लाने के इस जन-आंदोलन का समर्थन किया, साथ ही उसमें भाग भी लिया। लोक राज संगठन ने विभिन्न रिहायशी बस्तियों में लोगों को संगठित किया और शिक्षित किया, साथ ही जनता को सत्ता में लाने के इस पक्ष-निरपेक्ष आंदोलन में लोगों को जागृत किया। मुख्य वक्ताओं और कार्यकर्ताओं के निजी प्रयासों से देश के अलग-अलग भागों में सार्वजनिक सभा, नुक्कड़ सभा जैसे संयुक्त कार्यक्रमों को आयोजित किया गया। दिल्ली के रामलीला मैदान में 13 दिन के सत्याग्रह के दौरान लोक राज संगठन का नारा और बैनर 'भ्रष्टाचार का एक इलाज, लोक राज, लोक राज!' ने आंदोलन को काफी प्रभावित किया।

2.2. मणिपुर का जन-आंदोलन :

मणिपुरी समाज में भी कई मुद्दों को लेकर जन आंदोलन जारी है। सन् 2000 से भी ज्यादा पुरानी मणिपुरी सभ्यता दूसरी सभ्यताओं की भांति संघर्षों से भरी पूरी है। छोटे समूह की गरीब जनता ने समय-समय पर अपने अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई लड़ी है। मीतै राजाओं के शासन् काल से लेकर भारत के एक राज्य होने तक की अवधि में कभी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए, कभी अपने अधिकार के लिए, कभी गरीबी और भूखमरी से बचने के लिए समय-समय पर लड़ती आयी है। मणिपुरी समाज में जन आन्दोलनों की लंबी परम्परा है। उनमें ब्रिटिश शासन के खिलाफ उठे *अहान्बा नूपी लान* (प्रथम महिला युद्ध), *अनीसुबा नूपी लान* (दूसरा महिला युद्ध), अपने धर्म रक्षा के लिए उठे *मीतै मरुप* आंदोलन, *मैरा पाइबी* और

'आर्मद फोर्सेस स्पेशल पॉवर एक्ट लौथोक उ' (AFSPA हटाओ) आंदोलन उल्लेखनीय हैं। जब हम समकालीन मणिपुरी कविता में जन-आंदोलनों के प्रभाव के संदर्भ में विचार करते हैं तो इन कविताओं में खास तौर पर *मीतै मरुप*, *मैरा पाइबी* और 'AFSPA *लौथोक उ*' जन आन्दोलनों का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है।

महाराज गरीबनिवाज के राज्यकाल (सन् 1709-1748) के दौरान सन् 1716 में बांग्लादेश के श्रीहट जिले की नरसिंह टिला से शांतिदास गोसाईं नामक एक रामानंदी धर्म प्रचारक मणिपुर में आये और रामानंदी धर्म का प्रचार किया। शांतिदास गोसाईं ने धर्म प्रचार के दौरान मणिपुरी समाज में हाहाकार मचा। मणिपुर के सनामही धर्म से लोग वैष्णव धर्म में दीक्षा लेने लगे थे। इससे उनके अमूल्य ग्रंथों नष्ट होने लगे, मीतै लिपि (मणिपुरी लिपि) का स्थान बंगाली लिपि का लेने लगी। रहन-सहन से लेकर भाषा, लिपि, संस्कृति सब पर बंगाली का प्रभाव बढ़ने लगा। इस समय कुछ लोग मणिपुरी समाज का अंधा युग की संज्ञा देते हैं। कई पीढ़ियों तक धार्मिक व सांस्कृतिक संघर्ष के उपरांत नाओरिया फूलो के नेतृत्व में *सनामही लाइनीङ* या *मीतै मरुप* के नाम से पूरे मणिपुरी समाज में एक व्यापक जन-आंदोलन का उभार हुआ। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य हिंदू वैष्णव धर्म को छोड़ कर *सनामही लाइनीङ* (मीतै समुदाय का मूल धर्म) को अपनाना और अपने आदि पूर्वजनों से प्राप्त संस्कृति की रक्षा करते हुए उनके आधार पर जीवन यापन करना रहा है। इस आंदोलन में अपनी जाति, धर्म और संस्कृति को लेकर सजग नौजवानों ने व्यापक रूप से हिस्सा लिया। उन्होंने *सनामही लाइनीङ* का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ ब्राह्मणवादी नीतियों का खंडन किया। वैसे, मणिपुरी मीतै ब्राह्मण (मणिपुर में रहने वाले ब्राह्मण, यह समूह आर्य ब्राह्मण और मीतै स्त्री के संयोग से उत्पन्न पीढ़ी है) मीतैयों के हाथ का खाना नहीं खाते थे, पूजा-पाठ और धार्मिक कर्मकांडों का पूरा जिम्मा लेते थे। किंतु इस आंदोलन के दौरान युवा पीढ़ी ने बदला लेने के भाव से ब्राह्मणों के हाथ का खाना नहीं खाया, पूजा-पाठ और धार्मिक कर्मकांडों से उन्हें निष्कासित किया। यह आंदोलन आज फैलता जा रहा है। धीरे-धीरे मीतै जनता हिंदू धर्म को त्यागकर 'सनामही' धर्म की तरफ वापस लौट रही है। समकालीन मणिपुरी कविता में इस आंदोलन को बढ़ावा देते हुए और जनता को जागृत करते हुए लिखी गयी रचनाएँ पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलती हैं।

दूसरा जन-आंदोलन है 'मैरा पाइबी' (मशाल धारिणी) जन-आंदोलन। यह आंदोलन महिलाओं द्वारा चलाया गया है। इसका मतलब यह

नहीं है कि इसमें पुरुष सहयोग नहीं करते। इस आंदोलन को पुरुष व छात्र संगठन आदि का भी पूरा सहयोग मिला है। बात इतनी ही है कि इस आंदोलन में मुख्य भूमिका स्त्रियाँ निभा रही हैं।

इस आंदोलन की शुरुआत एक शराबखाने से हुई। सन् 1975 के 30 दिसंबर को क्कचीङ खुनलेन तुरेल अवाङ् लैकाय नामक स्थान पर एक घटना घटी। वहाँ के एक शराबखाने में शराब पी रहे पति को बुलाने गयी एक स्त्री के साथ शराब बेचनेवाले ने अभद्र व्यवहार किया, उसे बुरे तरीके से पीटा गया। इस घटना को लेकर स्थानीय महिलाएँ एकजुट हुईं और अपने क्षेत्र में शराब बेचने और पीने पर पाबंदी लगायी। यह खबर मणिपुर के कोने-कोने तक फैली तो जगह-जगह पर महिलाओं ने अपने क्षेत्रों में शराब बेचने और पीने पर रोक लगायी और 'निशा बंद' (नशा बंद) नाम से अपना-अपना संगठन बनाया। सन् 1976 के 21 अप्रैल को नाओरिया पाखङ्लाक्पा केंद्र में एक सभा बुलायी गयी। उस सभा में कोने-कोने से नशा बंदी संगठनों में काम कर रही महिलाओं ने आकर भाग लिया। उन्होंने मणिपुरी समाज में बढ़ रहे नशा के प्रयोग और उसके परिणाम स्वरूप महिला के प्रति बढ़ती हिंसा व यौन शोषण, बढ़ती घरेलू समस्याएँ इत्यादि कई बिंदुओं पर खोलकर चर्चा की। साथ ही 'ऑल मणिपुरी विमिंस सोशियल रिफोर्मेशन एंड डिवलपमेंट समाज' नाम से एक सामूहिक संगठन बनाया। उसकी प्रथम प्रेसिडेंट श्रीमती चाओबी देवी रहीं। इस तरह छोटे-छोटे नशा-बंद संगठनों ने एकजुट होकर जन आन्दोलन का रूप ले लिया। 'मैरा पाइबी' जन-आंदोलन का स्वरूप और उसकी भूमिका का धीरे-धीरे विकास होता गया। सन् 1980 के 4 अप्रैल को 'ऑल मणिपुरी विमिंस सोशियल रिफोर्मेशन एंड डिवलपमेंट समाज' ने मणिपुर सरकार को एक 'मेमोरेंडम' सौंपा। उस 'मेमोरेंडम' में चार माँगें शामिल थीं। वे थीं- मणिपुर में शराब बेचने पर रोक लगाना, मणिपुर के सिनेमा घरों में सुबह दस बजे से शो दिखाना बंद करना, महँगाई पर नियंत्रण करना और उग्रवादियों से शांति की बात करते हुए उन्हें साधारण जीवन में लाना आदि। मणिपुरी समाज की इन मुख्य समस्याओं को लेकर 'मैरा पाइबी' ने 'मणिपुर बंद' बुलाया। 'मैरा पाइबी' मणिपुर की महिलाओं का पर्याय हो गया है। मणिपुर के समस्त घरों की महिलाएँ इसमें शामिल हैं। घरेलू काम-काज और अन्य कर्तव्यों को निभाने के साथ-साथ वे अपने-अपने क्षेत्र में अनचाही घटनाओं को रोकने के लिए कमर में कपड़े बांधकर हाथ में मशाल लेकर रात में एकजुट होती हैं और अपनी रणनीति बनाती हैं। भारतीय सैनिकों का आधी रात में डाकू-डकैतों जैसे मुहल्लों में घूमना, उग्रवादियों की तलाशी के नाम

पर ऑपरेशन करके चोरी करना, स्त्रियों की इज्जत लूटना आदि करतूतों का सामना करते हुए उनलोगों ने कई रात बिना सोये अपने-अपने क्षेत्रों का रक्षा की है। इस तरह जरूरत पड़ने पर 'मैरा पाइबी' ने बंद, ब्लॉकेड, रैली, अनशन, धरना, आदि को समय-समय पर अपना हथियार बनाया है। समकालीन मणिपुरी कविता पर 'मैरा पाइबी' जन-आंदोलन का काफी प्रभाव पड़ा है। समकालीन मणिपुरी कविता में अंकित कमर में *ख्वाङचेत* (कमर में बांधने वाला छोटा-सा कपड़ा, जिसे मणिपुरी महिलाओं द्वारा ताकत लगाने वाले काम करने से पहले अपनी कमर में बांधा जाता है।) कसने वाली, हाथ में मशाल धारण करने वाली मणिपुरी महिला की जो छवि कविता में जगह-जगह पर मिलती है, उसे 'मैरा पाइबी' आंदोलन का प्रभाव माना जा सकता है।

तीसरा जन-आंदोलन है 'AFSPA हटाओ' आंदोलन। मणिपुर में 'आर्मद फोर्सेस स्पेशल पॉवर एक्ट-1958' जनता की इच्छा के विरोध लागू किया गया था। जनता इस एक्ट से निकलने वाले परिणाम जानती थी। शुरुआत में इस एक्ट को लेकर मणिपुर के बुद्धिजीवी वर्ग में काफी चर्चा हुई, साथ ही उन्होंने इसके विरोध में असंतुष्टि जताई। भारत सरकार से आग्रह भी किया कि भारत सरकार इस एक्ट को वापस ले। किंतु सरकार को कुछ फर्क नहीं पड़ा। मणिपुर में भारतीय सैनिकों से संबन्धित कुछ अनाकांक्षित घटनाएँ घटीं। इनमें से आतंकवादी खोजने के समय आम जनता के प्रति अभद्र व्यवहार, अत्याचार, स्त्री से छेड़खानी और बलात्कार आदि हैं। इस एक्ट के तहत सैनिकों द्वारा 'सनामचा काण्ड', 'मनोरमा बलात्कार काण्ड' जैसी घटनाएँ हुईं।

'आर्म फोर्सेस स्पेशल पॉवर एक्ट-1958' के विरोध में समय-समय पर जनता ने धरना-प्रदर्शन किया, जुलुस निकाला, 'AFSPA हटाओ' नारा लगाते हुए सरकार के खिलाफ आवाज उठायी। जनता का यह विरोध-प्रदर्शन धीरे-धीरे जन-आंदोलन के रूप में सामने आया। इस जन-आंदोलन को इरोम शर्मिला ने नई दिशा दी। मालोम हत्या-काण्ड ने मणिपुरी जनता को काफी प्रभावित किया। जनता के मन में असुरक्षित होने की दहशत और मजबूत हुई। सन् 2000 के 2 नवंबर को मालोम नामक स्थान पर में भारतीय सैनिकों के हाथों छात्र और साठ साल की एक महिला सहित दस आम आदमियों की मौत होती की। इस काण्ड को लेकर भारतीय सैनिकों के व्यवहार के विरुद्ध मणिपुरी जनता सड़क पर उतरती है। विरोध की इस कड़ी में इरोम शर्मिला चनु ने सत्याग्रह और अहिंसा के हथियार लेकर 5 नवंबर,सन् 2000 से

'आमरण अनशन' शुरू किया और 'मणिपुर से आर्मद फोर्सेस स्पेशल पॉवर एक्ट हटाओ' की माँग की। इसमें शर्मिला के सहयोग में सभी जनता एकजुट हुई। मणिपुरी समाज में बढ़ रही हिंसा, अत्याचार, दमन व शोषण की प्रमुख जड़ों में 'AFSPA' भी एक था। मणिपुरी जनता इस जड़ को उखाड़ना चाहती थी। 'AFSPA हटाओ' मांग को लेकर शर्मिला कई सालों तक आमरण अनशन करती रही।

2.3. हिंदी और मणिपुरी कविताओं में जन-आंदोलन का प्रभाव:

इन तमाम जन-आंदोलनों ने समकालीन हिंदी और मणिपुरी रचनाकारों को कहीं न कहीं प्रभावित किया है। इन जन आन्दोलनों से प्रभावित होकर इन्होंने कई कविताएँ रची हैं। उदाहरण के तौर पर, नर्मदा बचाओ आंदोलन से प्रभावित होकर समकालीन हिंदी कवि एकांत श्रीवास्तव लिखते हैं-

नक़्शे में ढूँढो हमारे दर्द का रंग

हमारे घर-गाँव की वनस्पतियाँ

इस ऋतु में खिलने वाले फूल

और बोलने वाली चिड़ियों के नाम नक्शे में ढूँढो

नक्शे में ढूँढो धूल-धूसरित रास्ते

जिन पर चलकर हम बड़े हुए

बगीचे आम के

खेत-खलिहान

और दीयों की उजास में नहाई कच्ची दहलीजें

यह किसका अश्वमेध ?

हमें रौंदते गुजर रहे

ये किसके अश्व ?

लहूलुहान आत्मा

और रौंदी हुई देह धरती की नक्शे में ढूँढो

नक़्शे में ढूँढो नर्मदा

और पानी में डूबते मेधा पाटकर के स्वप्न

नक़्शे में ढूँढो वह गाँव

जिसका नाम मणिबेली हो

(श्रीवास्तव 2003:80)

सरदार सरोवर बाँध परियोजना के तहत नर्मदा घाटी के कई गाँव डूब गये। घाटी की प्राकृतिक संपदा नष्ट हुई। कितने लोग बेघर हुए। रोजमर्रा के जीवन में आफत आयी। एकांत श्रीवास्तव की एक और कविता इस प्रकार-

हमने माँगी ज़रा-सी धरती

तुमने दे दी गोली

वह धरती जो कर्मभूमि थी

वह धरती जिस पर पले-बढ़े हम

वह धरती जिस पर लड़े-मरे हम

जिसकी कोख हरी की हमने वह धरती

जिसकी देह महकाई हमने वह धरती

जिसमें अन्न उगाया हमने वह धरती

वह धरती जिस पर गाँव हमारा

हमने माँगा उमर गाँव

तुमने दे दी गोली।

(श्रीवास्तव 2003:81)

सरदार सरोवर बाँध परियोजना के अंतर्गत डूब क्षेत्र में आ गए आदिवासियों को गाँव से हटाए जाने की प्रक्रिया में पुलिस ने गोलियाँ चलाईं। सरकार जनता की संवेदनाओं को समझने के बजाय उनके हित के विरोध में काम करती रही है।

समकालीन हिंदी कवि कुमार अंबुज की 'आदिवासी मुक्ति आंदोलन' से प्रभावित होकर लिखी गयी कविता 'सताए हुए लोग' का एक अंश इस प्रकार है-

इस पृथ्वी पर संभव है संपन्न लोगों का जीवन

कि सताए हुए लोग चले आ रहे हैं जीवित

असंख्य और असमाप्त

लाखों की जगह जो करोड़ों लेते हैं

वे निर्बल, हड्डियों के बीच चमकती हैं जिनकी आंतें

पैसे की मार से कांपते सक्रिय

बल खाते हुए बीच-बीच में बजाते बिगुल

फिर एक छोटी-सी दया के चाबुक से

वापस जुटते अपने सनातन काम में

(अंबुज 2002:106)

आज तक जो हाशिए में थे, वे सब अपने अधिकार के लिए लड़ने निकले हैं। उनके सामने कई समस्याएँ हैं। न धन है न दौलत, फिर भी वे अपने अधिकार के लिए, अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए एकजुट हुए हैं।

मणिपुरी समाज में हो रहे *सनामही लाइनींग* जन-आंदोलन से प्रभावित होकर लिखी गयी लनचेनबा मीतै की कविता का हिंदी रूप इस प्रकार से है-

तुम्हारे मीतै

जन्म से ही जीवित नहीं रहे

वे स्वयं की लाश ढोकर

दर-दर भटक रहे हैं

खुद का नाम पूछ-पूछकर।

(मीतै 1999:44)

इस आंदोलन के नेता नाओरिया फूलो से कवि कहते हैं कि तुम्हारे समस्त मीतै मरे हुए हैं। वे अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा भी नहीं कर सकते हैं। दूसरों के धर्म और संस्कृति अपना रहे हैं जैसे अपने लिए कुछ नहीं हो।

मैरा पायबी जन-आंदोलन से प्रभावित होकर समकालीन मणिपुरी रचानाकारों के द्वारा कई कविताएँ रची गयीं। अङोम सरिता द्वारा लिखी मणिपुरी कविता का हिंदी रूप इस प्रकार है-

नहीं हैं हम

चारों दीवारों से घिरे

अँधेरे कमरे में

स्वयं की स्वतंत्रता त्यागकर

बैठे रहने वाली

चलना है हमें

पुरुषों से आगे

हाथ में मशाल लेकर

एक आदर्श

स्थान के लिए

(देवी 2003:57)

हाथ में मशाल धारिणी महिला मीतै महिलाओं की प्रतीक बन चुकी है। उनके साहस की प्रशंसा मणिपुर की हर किसी लड़की के मन में समा गयी है।

'AFSPA- हटाओ' जन आंदोलन से प्रभावित होकर समकालीन मणिपुरी रचनाकारों ने इस आंदोलन की नेता के रूप में उभर रही इरोम शर्मिला के ऊपर कई कविताएँ लिखी हैं। थौदाम नेत्रजित सिंह की कविता का हिंदी रूप इस प्रकार है-

देखो शर्मिला

कितना प्यारा है तुम्हारे मणिपुर का आकाश

कितना स्पष्ट

रात ही होती रहती थी

किंतु आज

फेंकने लगा है

अपना असली प्रकाश

थकी-हारी

जनता के कानों में

तुम कुछ न कुछ सुनाती रहती हो

अब तो सब समझ गये हैं

वे लोग भी मुट्ठी बाँधकर

चुनौती देने लगे हैं।

(सिंह 2006:76)

'AFSPA- हटाओ' आंदोलन में शर्मीला के आने से नई दिशा मिली है। जनता के मन में पुनःजागृति हुई है। अब जनता फिर से एकजुट हुई है। शर्मिला के साथ नई रणनीति बनाकर आगे बढ़ रहे हैं। बीरेंद्रजित नाओरेम की कविता का हिंदी रूप इस प्रकार है-

मुँह में अमृत लिए

तुम्हारे पास खड़े उन दयालुओं पर

कभी विश्वास मत करना

विश्वास मत करना उनके श्रृंगारिक शब्द

कैदी बना देते हैं

तुम्हारे निर्दोष शब्दों को।

तुम्हारे लिए तो चुप रहना ही बेहतर है

गूँगी बनकर।

(नाओरेम 2008:59)

जनता की माँग को लेकर सही या गलत का निर्णय लेने के बजाय भारत सरकार के दूत बनकर जन प्रतिरोध को दबाने के प्रयास में लगे रहना शासक वर्ग की नियति रही है। शर्मिला के 'आमरण अनशन' की भीतरी संवेदना को समझने के बजाय अनशन रोकने का प्रस्ताव लेकर शासक वर्ग के कई प्रतिनिधि आते रहते हैं। शरतचांद थियाम की कविता का हिंदी रूप इस प्रकार है-

आग में धार किये कितने लोहे

हार गये तुमसे

पत्थर में जान नहीं है

यह भी जानती हो तुम।

इसलिए तुम पत्थर नहीं बनी

सोचा भी नहीं बनने के लिए।

चेङ्ही* की खुशबू से बिसड़े

तुम्हारे बालों ने

दिखायी तुम्हारी चाहत।

एक-एक बाल

कोशिश कर रहा है बांधने की

तुम्हारा शत्रु।

(थियाम 2006:84)

'AFSPA- हटाओ' जन आंदोलन की कड़ी में मनोरमा बलात्कार कांड को लेकर भारतीय सैनिकों के सामने मणिपुरी महिलाओं ने निर्वस्त्र होकर 'बलात्कार करो' नारा लगाकर विरोध प्रदर्शन किया। उससे प्रभावित होकर लिखी गयी अराम्बम ओंग्बी मेमचौबी की कविता का हिंदी रूप इस प्रकार है-

क्या तुमने ऐसा सोचा था
उस दिन केवल वही माँएँ थीं
कपड़े उतारकर
शर्म और हया से चुनौती देने वाली।
नहीं .....
लूटी है इज्जत हम सभी छोटे लोगों की
जो.....
भाई और पति
रक्षा नहीं कर पाये, बचा नहीं पाये
स्वयं का भविष्य न बना सकने वाले
धरती में जी रहे छोटे-छोटे समूह
और उनकी पत्नियाँ
सबका उतर गया है वस्त्र
और लूट गयी है इज्जत सम्मान
नहीं लूटी है इज्जत सिर्फ मनोरमा की।

(मेमचौबी 2008:103)

3. निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि आज भारतीय जनता संकट में है। हर दिशा से उस पर आक्रमण किया जा रहा है। राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और धार्मिक हर स्तर पर जनता अपने अस्तित्व व अस्मिता के लिए संघर्ष कर रही है। अपने अस्तित्व व अस्मिता के इस संघर्ष में जनता को कभी-कभी सड़क पर भी उतरना पड़ रहा है, उतर भी रही है। कई बार यह जन-संघर्ष जन-आंदोलन का रूप भी ले लेता है। आज देश के कोने-कोने में हो रहे जन-आंदोलन इसी जन-संघर्ष का ही विकसित रूप है। आज भारत में चल रहे समस्त जन आंदोलन दिन प्रतिदिन प्रबल होते जा रहे हैं। किंतु दुःख की बात यह है कि हमारे पास प्रभावशाली नेताओं की कमी होने के कारण कई बार हमें पीछे हटना पड़ रहा है। एक तरह से कहा जाय तो यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि समकालीन हिंदी और मणिपुरी कविताएँ भी इन तमाम जन-आन्दोलनों से प्रभावित हैं। साथ ही ये जन-आंदोलनों का एक बड़ा हिस्सा बन चुकी हैं। इन कविताओं में जन-आंदोलन के चित्र काफी संवेदनशील रूप में देखने को मिलते हैं। जनता के कड़े प्रतिरोध के बावजूद सरकार की तरफ से कोई सकारात्मक निर्णय नहीं दिखायी पड़ रहा है।

शब्दार्थ :

*चेङही - चावल धोने के बाद उस पानी में कई प्रकार की जड़ी-बूटियाँ डालकर उबाल लिया जाता है और उससे बाल धोये जाते हैं।

टिप्पणी :

आलेख में मणिपुरी के शब्द इटालिक्स में रखे गए हैं।

ग्रंथ-सूची :

कुमार, अंबुज. अतिक्रमण. पहला संस्करण. दिल्ली:राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 2002.

थियाम, शरतचांद. सूनामी. पहला संस्करण. इंफाल:साथौलूप, 2006.

देवी, अङोम सरिता. अङाङबा गुलाप. पहला संस्करण. इंफाल:मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी, 2003.

नाओरेम, बीरेंद्रजित. तुरेल नङद. पहला संस्करण. इंफाल: रिंदा लाइब्रेरी एंड प्रिजर्वेशन फाउण्डेशन मणिपुर, 2008.

मीतै, लन्चेन्बा. थामोइनूङ्दगी. पहला संस्करण. इंफाल:मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी, 1999.

मेमचौबी, अराम्बम ओंग्बी. लैसङ्. पहला संस्करण. इंफाल:अराम्बम योइमयाइ, 2008.

श्रीवास्तव, एकांत. मिट्टी से कहूँगा धन्यवाद. नयी दिल्ली:प्रकाशन संस्थान, द्वितीय संस्करण, 2003.

सिंह, थौदाम नेत्रजित. लान्फम्सिदा. पहला संस्करण.इंफाल:थौदाम ओंग्बी ईशैहनबी देवी, 2006.

संपर्क-सूत्र:

मणिपुर